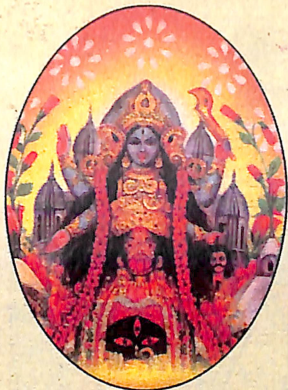


काली चालीसा

सरल हिन्दी अनुवाद, श्री काली पूजन मंत्र व पूजन विधि, श्री काली स्तोत्रम्, श्री काली स्तवन, श्री काली कवचम् संकटमोचन काली अष्टक व आरती

मनोज
पब्लिकेशन्स



ॐ क्रीं कालिकायै नमः

काली चालीसा

सरल हिन्दी अनुवाद, श्री काली पूजन यंत्र व पूजन विधि, श्री काली स्तोत्रम्, श्री काली स्तवन, श्री काली कवचम्, संकटमोचन काली अष्टक व आरती सहित

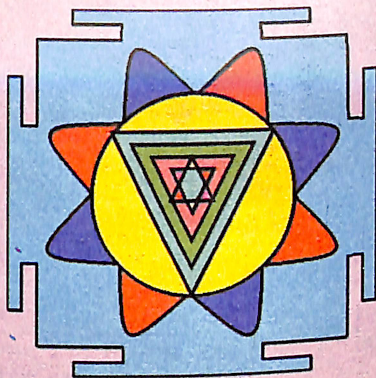
मनोज पब्लिकेशन्स
761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349 फैक्स : 27611546
ईमेल : manojpublication@mantraonline.com

मूल्य 8/-

श्री काली पूजन यंत्र

'पूजन यंत्र' की निर्माण विधि इस प्रकार कही गई है–

पहले बिन्दु ॐ, उसके बाद निज बिन्दु क्रीं, फिर भुवनेश्वरी बीज ह्रीं लिखकर उसके बाहर एक त्रिकोण अंकित करें। तत्पश्चात् उस त्रिकोण के बाहर क्रमशः चार अन्य त्रिकोण बनाकर एक वृत्त, फिर अष्टदल पद्म तथा पुनर्वार वृत्त अंकित करें। उसके बाहर यहां दिए गए चित्र की भांति चतुर्द्वार अंकित करके यन्त्र को पूर्ण रूप दे देना चाहिए।



श्री काली पूजन यंत्र

पूजन विधि

प्रातःकाल नित्य कर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें, तदोपरान्त काली का चित्र तथा पूजन यंत्र (ताम्रपत्र पर खुदा अथवा भोजपत्र पर हल्दी से बना) सामने रखें। फिर शुद्ध घी का दीपक, अगरबत्ती, चावल, पुष्प, सिंदूर व नारियल चढ़ाकर निम्न मंत्र का जप करें–

ॐ ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा।

इसके पश्चात् काली जी का ध्यान करते हुए काली चालीसा का पाठ करें। महाकाली निश्चित ही आपकी मनोकामना पूर्ण कर आपको सफलता प्रदान करेंगी।

ध्यान

शवारूढ़ां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खंगमुण्डवराभयकरां शिवाम्।
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिहां दिगम्बराम्।
एवं सञ्चिन्तयेत्कालीं श्मशानालय वासिनीम्।।



श्री काली चालीसा

।। दोहा ।।

जय काली कलिमल हरण, महिमा अगम अपार।
महिष मर्दिनी कालिका, देहू अभय अपार।।

हे मां काली! आप संसार के पाप हरने वाली हैं। आपकी महिमा अपरम्पार है। आपने महिषासुर का वध करके संसार को अपार अभय प्रदान किया।

।। चौपाई ।।

अरि मद मान मिटावन हारी। मुण्डमाल गल सोहत प्यारी।।
अष्टभुजी सुखदायक माता। दुष्टदलन जग में विख्याता।।

हे मुंडमालिनी अष्टभुजा काली माता! आप शत्रुओं का अहंकार नष्ट करने वाली भक्तों को सुख प्रदान करने तथा दुष्टों के संहारक के रूप में जग विख्यात हैं।

भाल विशाल मुकुट छवि छाजै। कर में शीश शत्रु का साजै।।
दूजे हाथ लिए मधु प्याला। हाथ तीसरे सोहत भाला।।

आपके विशाल मस्तक पर मुकुट सुशोभित है। आपके एक हाथ में शत्रु का कटा शीश है दूसरे में मधु (मदिरा) का प्याला तथा तीसरे में भाला शोभायमान है।

चौथे खप्पर खड्ग कर पांचे। छठे त्रिशूल शत्रु बल जांचे।।
सप्तम कर दमकत असि प्यारी। शोभा अद्भुत मात तुम्हारी।।

चौथे हाथ में खप्पर तथा पांचवें में खड्ग (तलवार) है। छठे हाथ के त्रिशूल से आप शत्रु बल जांचती हैं। आपके सातवें हाथ में असि शोभायमान है।

अष्टम कर भक्तन वर दाता। जग मनहरण रूप ये माता।।
भक्तन में अनुरक्त भवानी। निशदिन रटें ऋषी-मुनि-ज्ञानी।।

आठवें हाथ से आप भक्तों को वरदान देती हैं। आपका यह रूप अत्यन्त मनोहारी है। भक्तों पर आपका बहुत स्नेह है। ऋषि-मुनि सदा आपकी स्तुति करते हैं।

महाशक्ति अति प्रबल पुनीता। तू ही काली तू ही सीता।।
पतित तारिणी हे जग-पालक। कल्याणी पापी कुल घालक।।

आप काली एवं सीता के रूप में महाशक्तिशाली, प्रचण्ड और पवित्र हैं। हे जगपालिके! पतिततारिणी आप पापियों के कुल को नष्ट करने वाली, कल्याणी हैं।

शेष सुरेश न पावत पारा। गौरी रूप धर्‌यो एक बारा।।
तुम समान दाता नहिं दूजा। विधिवत् करें भक्तजन पूजा।।

एक बार आपने पार्वती का रूप धारण किया। आपकी लीला अपरम्पार है। आप-सा कोई दूसरा नहीं है। भक्तजन आपकी विधिवत् पूजन करते हैं।

रूप भयंकर जब तुम धारा। दुष्टदलन कीन्हेहु संहारा।।
नाम अनेकन मात तुम्हारे। भक्तजनों के संकट टारे।।

जब-जब आपने प्रचण्ड रूप धारण किया, अनेक दुष्ट और पापी आपके द्वारा मारे गए। हे माता! आपके अनेक नाम हैं जो भक्तजन के संकट दूर कर देते हैं।

कलि के कष्ट कलेशन हरनी। भव भय मोचन मंगल करनी।।
महिमा अगम वेद यश गावैं। नारद शारद पार न पावैं।।

आप कलियुग के समस्त कष्टों को दूर कर भय हरने वाली तथा मंगल करने वाली हैं। आपका यश वेद गाते हैं। नारद और शारद ने भी आपका पार नहीं पाया है।

भू पर भार बढ्‌यौ जब भारी। तब-तब तुम प्रकटीं महतारी।।
आदि-अनादि अभय वरदाता। विश्वविदित भव संकट त्राता।।

जब-जब धरती पर पापों का बोझ बढ़ा, आप प्रकट हुईं। हे मां! आप संकट-हरण करने वाली अभयदायिनी माता के रूप में जगविख्यात हैं।



कुसमय नाम तुम्हारौ लीन्हा। उसको सदा अभय वर दीन्हा।।
ध्यान धरें श्रुति शेष सुरेशा। काल रूप लखि तुम्हरो भेषा।।

विपत्ति पड़ने पर जिसने भी आपका स्मरण किया, आपने सदैव उसकी सहायता की है। आपके अति भयंकर काल रूप के समक्ष देवी-देवता भी आराधनारत हो उठते हैं।

कलुआ भैंरों संग तुम्हारे। अरि हित रूप भयानक धारे।।
सेवक लांगुर रहत अगारी। चौंसठ जोगन आज्ञाकारी।।

भयानक रूप धारण किए काल भैरव आपके साथ हैं। हे माता! चौंसठ जोगन सेविकाएं आपकी आज्ञाकारिणी हैं और लांगुर सेवक सदैव आपकी सेवा को तत्पर हैं।

त्रेता में रघुवर हित आई। दशकंधर की सैन नसाई।।
खेला रण का खेल निराला। भरा मांस-मज्जा से प्याला।।

त्रेता युग में भगवान श्रीराम की सहायता के लिए प्रकट हो आपने रावण की सेना नष्ट की। रण में आपने दानवों के मांस से अपना खप्पर भर लिया।

रौद्र रूप लखि दानव भागे। कियौ गवन भवन निज त्यागे।।
तब ऐसौ तामस चढ़ आयो। स्वजन विजन को भेद भुलायो।।

आपका रौद्र रूप देखकर असुर अपने भवन छोड़ वन की ओर भाग निकले। जब-जब पाप का अन्धकार बढ़ता है, आप अपने-पराए का भेद मिटाकर प्रकट होती हैं।

ये बालक लखि शंकर आए। राह रोक चरनन में धाए।।
तब मुख जीभ निकर जो आई। यही रूप प्रचलित है माई।।

शंकर भी बालक बनकर आपके चरणों में लेट गए। उन्हें देख आपकी जिह्वा बाहर निकल पड़ी और आपका यही रूप जग-प्रचलित हो गया।

बाढ्यो महिषासुर मद भारी। पीड़ित किए सकल नर-नारी।।
करुण पुकार सुनी भक्तन की। पीर मिटावन हित जन-जन की।।

जब महिषासुर का आतंक बढ़ने लगा तो आपने भक्तों की करुण पुकार तुरन्त सुनीं और पीड़ित मानवता के उद्धार को उद्यत हो उठीं।

तब प्रगटी निज सैन समेता। नाम पड़ा मां महिष-विजेता।।
शुंभ-निशुंभ हने छन माहीं। तुम सम जग दूसर कोउ नाहीं।।

हे माता! आपने सेना सहित प्रकट होकर महिषासुर का संहार किया। शुंभ-निशुंभ दैत्यों को आपने पल में मार डाला। आप अद्वितीय हैं।

मान-मथनहारी खल दल के। सदा सहायक भक्त विकल के।।
दीन विहीन करैं नित सेवा। पावैं मनवांछित फल-मेवा।।

हे मां! आप शत्रुओं का गर्व तोड़ने वाली और भक्तजनों की सदा सहायक हैं। जो दीन-दुखी नियमित आपकी सेवा करते हैं, उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

संकट में जो सुमिरन करहीं। उनके कष्ट मातु तुम हरहीं।।
प्रेम सहित जो कीरति गावैं। भव बन्धन सों मुक्ति पावैं।।

हे माता! जो संकट काल में आपका स्मरण करता है, आप उसका कष्ट हरती हैं। हे मां जो भी भक्तिभाव से आपका यशोगान करता है, आप उसे मुक्ति प्रदान करती हैं।

काली चालीसा जो पढ़हीं। स्वर्गलोक बिनु बन्धन चढ़हीं।।
दया-दृष्टि हेरौ जगदम्बा। केहि कारण मां कियौ विलम्बा।।

जो नियमपूर्वक भक्तिभाव से काली चालीसा का वाचन करता है, उसकी सद्गति अवश्यंभावी है। हे जगतजननी! मुझ पर अविलम्ब कृपा दृष्टि डालें, कैसी देरी है?

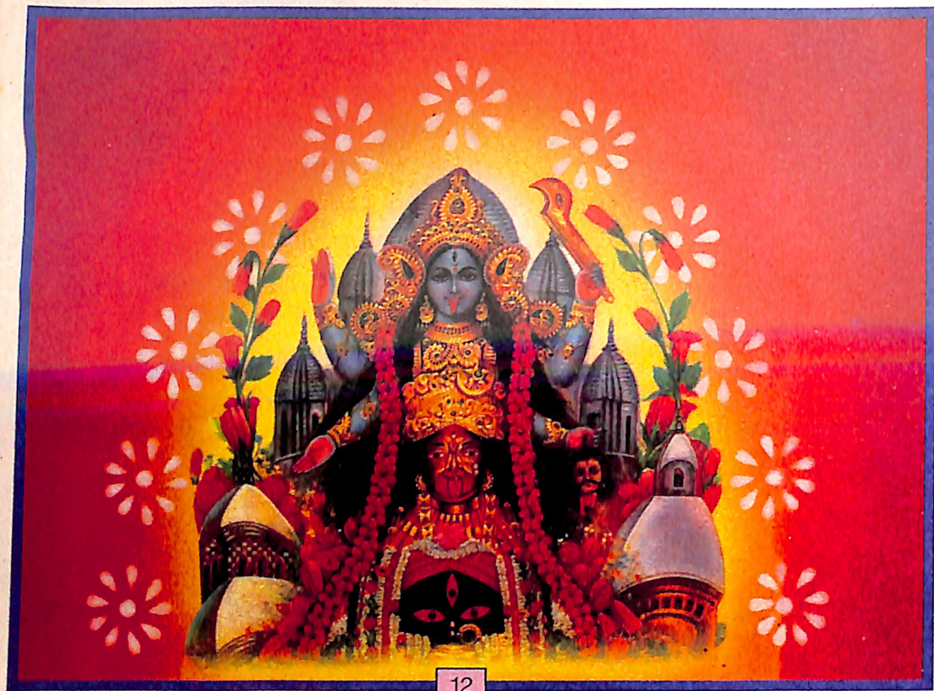
करहु मातु भक्तन रखवाली। जयति-जयति काली कंकाली।।
सेवक दीन अनाथ अनारी। भक्तिभाव युत शरण तुम्हारी।।

हे माता! भक्तों की रक्षा करो। आपकी जय हो-जय हो। यह मूर्ख, दीन-हीन सेवक आपकी शरण में है।

।। दोहा ।।

प्रेम सहित जो करे, काली चालीसा पाठ।
तिनकी पूरन कामना, होय सकल जग ठाठ।।

जो प्रेम और भक्तिभाव से काली चालीसा का पाठ करता है, उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। वह मान, सम्मान और सफलता प्राप्त करता है।



श्री काली स्तोत्रम्

ॐ अचित्त्यामिताकार शक्ति स्वरूपा प्रति व्यक्तधिष्ठान सत्वैक मूर्तिः।
गुणातीत निर्द्वन्द्वबोधैक गम्यात्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

आपके आकार, शक्ति तथा तेज की कोई थाह नहीं है। आप प्रत्येक में सत्व रूप में प्रतिष्ठित हैं। आप तीनों गुणों से परे अद्वैत ज्ञान से प्राप्त होने वाली परब्रह्मरूप हैं।

अगोत्रा कृतित्वादनैकान्तिकत्वा दलक्ष्यागमत्वाद शेषाकर त्वात्।
प्रपंचालसत्वादना रम्भकत्वात् त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

आप गोत्र रहित, निराकार, अस्थिर सभी गतियों से परे हैं। आप विश्वरूपा हैं और छल-प्रपंच से रहित भी। आप स्वयं परब्रह्मरूप हैं।

यदा नैवधाता न विष्णुर्नरुद्रो न कालो न वा पंचभूतानिनाशा।
तदा कारणीभूत सत्वैक मूर्ति त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

जब ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, काल, पंचभूत आदि कोई भी नहीं थे, तब भी आप सत्वमूर्ति के रूप में स्वयंभू थीं। आप अलौकिक शक्ति से सम्पन्न परब्रह्मरूप में स्वयंसिद्धा हैं।

न मीमांसकानैव कालादितर्का न सांख्या न योगा न वेदान्त वेदाः।
न देवा विदुस्ते निराकार भावं त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

हे माता! मीमांसाकाल, तर्क, सांख्य, योग, वेदान्त, वेद तथा देवगण भी आपके निराकार रूप का वर्णन नहीं कर सकते। आप परब्रह्मरूप में ही सिद्ध होने वाली हैं।

न ते नामगोत्रे न ते जन्म मृत्यु न ते धाम चेष्टे न ते दुख सौख्ये।
न ते मित्र शत्रु न ते बन्ध मोक्षौ त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

हे मातेश्वरी! आप नाम-गोत्र, जन्म-मृत्यु, गृह-चेष्टा, दुःख-सुख, मित्र-शत्रु, मोक्ष-मुक्ति आदि से परे हैं। आप परब्रह्मरूप में सिद्ध हैं।

न बाला न च त्वं वयस्था न वृद्धा न च स्यादिषष्ठ पुमान्नैव च त्वम्।
न च त्वं सुरो नासुरो नो नरो वा त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

आप न युवा हैं , न वृद्धा हैं न बाला। न ही स्त्री हैं न नपुंसक। आप पुरुष भी नहीं हैं। आप देवता हैं न असुर। आप मनुष्य भी नहीं हैं। आप तो परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हैं।

जले शीतलत्वं शुचौदाहकत्वं विधौ निर्मलत्वं रवौ तापकत्वम्।
तवैवाम्बिके यस्य कस्यापि शक्ति त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

हे जगदम्बे! जल में शीतलता, अग्नि में दहन, चंद्रमा में निर्मलता तथा रवि में अग्नि के रूप में आप ही विद्यमान हैं। आप ही सभी की शक्ति हैं। आप परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हैं।

पपौक्ष्वेडमुग्रे पुरा यन्महेशः पुनः संहरत्यन्त काले जगच्च।
तवैव प्रसादान्न च स्वस्य शक्त्या त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

हे परब्रह्म में सिद्ध! पूर्वकाल में भगवान शंकर द्वारा हलाहल का पान, प्रलयकाल में संसार-संहार का कार्य आपकी ही सामर्थ्य के कारण संभव हुआ!

कराला कृतीन्यान्यानि भ्रमन्ती भजन्ती करास्त्रादि बाहुल्यमित्थम्।
जगत्पालनायासुराणां वधाय त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

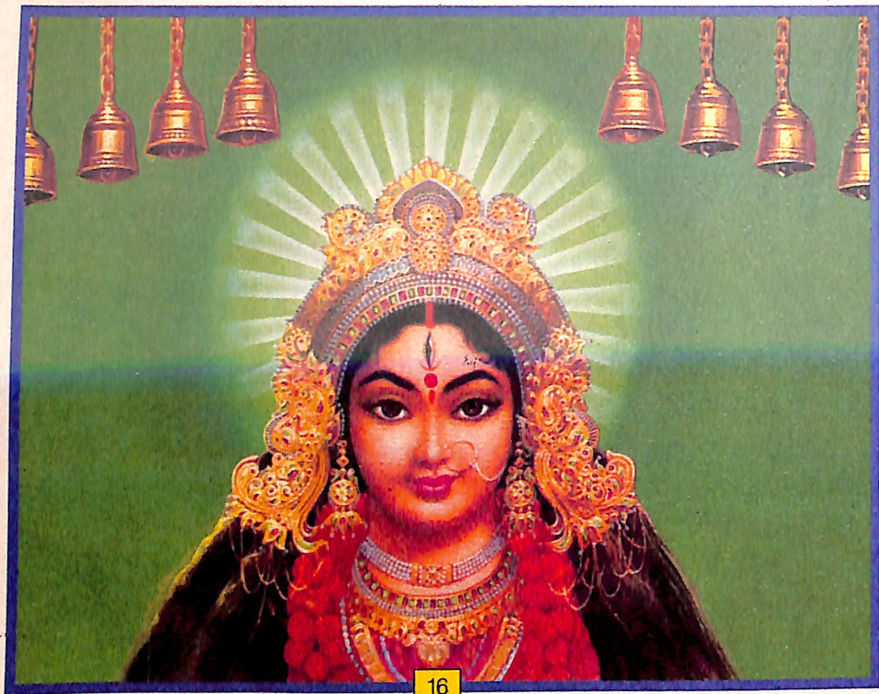
हे मां! आप संसार के पालन तथा शत्रुओं के संहार हेतु अस्त्र-शस्त्र धारण किए हुए हैं। आप राक्षसों की संहारक हैं। आप परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हैं।

रुवन्ती शिवाभिर्वहन्ती कपालं जयन्ती सुरारीन् बधन्ती प्रसन्ना।
नटन्ती पतन्ती चलन्ती हसन्ती त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

हे महाकाली! आप शिव से भी भयंकर उद्घोष करने वाली, कपाल धारिणी, देव-शत्रुओं की संहारक, प्रसन्नचित्त, नृत्यरत और कल्याणी हैं। आप परब्रह्मरूप हैं।

अपादापिवाताधिकं धावसित्वं श्रुतिभ्यां विहीनापि शब्द शृणोसि।
अनासापिजिघ्रस्यनेत्रापि पश्य स्वजिह्वापि नानारसास्वाद विज्ञा।।

हे कल्याणी! आप बिना चरण दौड़ती हैं। कर्णविहीन होकर भी सुनती हैं। बिना नासिका के गंध लेती हैं। नेत्रविहीन होकर भी दृष्टि वाली और बिना जिह्वा के स्वाद जानती हैं।



यथा भ्रामयित्वा मृद चक्र मध्ये कुलाली विधत्ते शरावं घटं च।
महामोह यंत्रेषु भूतान्यशेषान् तथा मानुषास्त्वं सृत्रस्यादि सर्गे।।
यथा रंग रज्वर्क दृष्टिष्व कस्मान्नृणांरूपदर्वी कराम्बुभ्रमः स्यात्।
जगत्यत्र तत्तन्मये तद्वदेव त्वमेकैव तत्तन्नितत्रौ समस्तम्।।

जिस प्रकार कुम्हार चाक पर घटादि का निर्माण करता है, उसी प्रकार आप अपने महामोह रूपी चाक पर मनुष्यादि की सृष्टि करती हैं। हे माता! रांगे में चांदी, रस्सी में सर्प तथा सूर्य-किरणों में जल के भ्रम की तरह यह संसार आप में भासित हो रहा है और अवसान होने पर आप में ही समा जाता है।

महाज्योति एका सिंहासनं वत् त्वकीयान् सुरान् वाहयस्युग्रमूर्ते।
अवष्टभ्य पद्भ्यां शिवं भैरवं च स्थिता तेन मध्ये भवत्येव मुख्या।।

हे तेजोमयी! आप ही देवगण को सिंहासनों पर आरूढ़ करने वाली हैं। आप उग्र रूप धारण कर शिव व भैरव को अपने पैरों में दबाकर अपूर्व रूप में सुशोभित होती हैं।

कुयोगासने योग मुद्राभिनीतिः कुगोसायु पोतस्य वालाननं च।
जगन्मातरादृक तवा पूर्वलीला कथं कारमस्मद्विधैर्देवि गम्या।।

हे विश्वेश्वरी! कुयोगासन पर योग-मुद्रा का अभिनय तथा कुत्सित श्रृगाल-शावकों के क्षुद्र-मुण्ड धारण! ये सब आपकी अपूर्व लीलाएं हैं। हम जैसे इन्हें कैसे समझ सकते हैं।

महाघोर कालानल ज्वाल ज्वाला हित्यत्यंतवासा महाट्टाट्टहासा।
जटाभार काला महामुण्ड माला विशाला त्वमहिय मयाध्यायशऽम्ब।।

हे अम्बे! आप कालानल प्रचण्ड अट्टहास करती हुई जटाधारिणी हैं। कृष्णवर्णा, मुण्डमाला धारण किए आप विशाल स्वरूप में स्थित हैं। आपको हमारा नमन है।

तपोनैव कुर्वन् वपुः साधयामि ब्रजन्नापि तीर्थं पदे खंजयामि।
पठन्नापि वेदान् चनि यापयामि त्वदंघ्रिद्वयं मंगलं साधयामि।।

हे मां! हम तो आपकी चरण सेवा में ही निमग्न रहना चाहते हैं। हमें जप-तप, तीर्थाटन और वेदाध्ययन कुछ भी नहीं चाहिए।

तिरस्कुर्वतोऽन्यामरोपासनार्चे परित्यक्त धर्माध्वरस्यास्य जन्तोः।
त्वदाराधनान्यस्त चित्तस्य किं मे करिष्यन्त्यमी धर्मराजस्य दूताः।।

हे जगजननी! हमने अन्य देवों की उपासना-अर्चना यज्ञादि को त्याग मन को आपकी आराधना में लगाया हुआ है। अब धर्मराज के दूत हमारा क्या अहित कर सकते हैं।

न मन्ये हरिं नो विधातारमीशं न वह्निं न ह्यर्कं न चेन्द्रादि देवान्।
शिवोदीरितानेक वाक्यप्रबन्ध स्त्वदर्चाविधानं विशत्वम्बमत्याम्।।

हे जगद्धात्री! हम हरि, ब्रह्मा, ईशान, सूर्य और इन्द्रादि देवताओं को नहीं मानते। हमें तो शिव प्रतिपादित तन्त्र-वाक्यों में ही दृढ़ विश्वास है। आपकी स्तुति हमारे मन में चल रही है।



नरा मां विनिन्दन्तु नाम त्यजेद्बान्धवा ज्ञातयः सन्त्यजन्तु।
मयि भटा नारके पातयन्तु त्वमेका गतिर्मे त्वमेका गतिर्मे।।

लोग चाहे मेरी निन्दा करें, बन्धु-बान्धव मेरा त्याग कर दें, यम के दूत मुझे भले ही नरक में फेंक दें, मेरी गति आप ही हैं, आप ही हैं। आपके सिवाय मेरा कोई नहीं है।

श्री काली स्तवन

नमामि कृष्णरूपिणीं कृष्णांगयष्टि धारिणीम् ।
समग्र तत्वसागर भपारसारगहराम् ।।

कृष्णरूपा काले अंगों को धारण करने वाली समस्त तत्वों की महासागर सरलता से प्राप्त अत्यंत गुह्य भगवती काली को नमस्कार है।

शिवां प्रभां समुज्ज्वलां स्फुरच्छशांक शेखरां ।
ललाटरत्न भस्करां जगत्प्रदीप्ति भास्कराम् ।।

कल्याण स्वरूपा एवं उज्ज्वला प्रकाशित चन्द्रमा को मस्तक पर धारण करने वाली, सबके ललाट में प्रकाश भरने वाली, संसार को प्रकाशित करने वाले भगवान सूर्य के समान हैं आप।

महेन्द्र कश्यपर्चितां सनत्कुमार संस्तुतां ।
सुरासुरेन्द्र वंदितां यथार्थ निर्मलाद्द्भुतां ।।

हे माता! आपको महेन्द्र तथा कश्यप ने पूजा है। सनत्कुमारों ने आपकी स्तुति की है। देवता और दानव आपके भक्त हैं। आप निर्मल तथा अद्भुत हैं।

अतर्क्यरोचिरुर्जितां विकारदोष वर्जितां।
मुमुक्षुभिर्विचिन्तितां विशेषतत्व सूचितां।।

आप तर्क-वितर्क से परे हैं। आप साक्षात् ज्योति तथा ओज प्रदायक हैं। आप निर्विकार हैं। मुमुक्षु आपका चिन्तन करते हैं। तत्वज्ञान से आपको पहचाना जा सकता है।

मृतास्थिनिर्मित स्रजां मृगेन्द्र वाहनाग्रजाम्।
सुशुद्ध तत्वतोषणां त्रिवेद पारभूषणाम्।।

आप अस्थि धारण करती हैं। आपका वाहन सिंह है। आप सर्वप्रथम जन्मी हैं। तत्वज्ञानी आपको प्रसन्न कर लेते हैं। आप वेदों में श्रेष्ठ और सदा सुशोभित हैं।

भुजंग हार हारिणीं कपाल खड्गधारिणीम्।
सुधार्मि कोप कारणीं सुरेन्द्र वैरघातिनीम्।।

सर्पहार धारण करने वाली, हाथ में कपाल और खड्ग ग्रहण किए आप अधर्मियों पर क्रोध करने वाली और देव-शत्रुओं का संहार करने वाली हैं।

कुठारपाशचापिनीं कृतान्त काममोदिनीं।
शुभां कपाल मालिनीं सुवर्णकन्यशाखिनीं।।

कुठार, पाश तथा धनुष धारण किए आप मृत्यु का निवारण करने वाली और सदा कल्याणी हैं। आप कपाल-माला धारण करने वाली तथा परम सुन्दरी हैं।

श्मशान भूमि वासिनीं द्विजेन्द्र मौलिभाविनीम् ।
तमोऽन्धकार यामिनीं शिवस्वभाव कामिनीम् ।।

आप श्मशान भूमि में निवास करती हैं। श्रेष्ठ विद्वानों एवं ब्राह्मणों द्वारा चिन्तन की जाती हैं। घोर अन्धकार के समान रात्रिरूपिणी हैं। आप शिवस्वरूप कल्याणकारिणी देवी हैं।

सहस्र सूर्य्यराजिकां धनंजयोग्रकारिकाम् ।
सुशुद्ध काल कंदलां सुभृंगवृन्दमन्जुलाम् ।।

आप सहस्रों सूर्यों के समान महाप्रकाश स्वरूपा धनंजय को साहस प्रदान करने वाली, विशुद्ध काल की मूलभूता और चमकीले भ्रमरों के समान मनोहर वर्ण वाली हैं।

प्रजायिनीं प्रजावतीं नमामि मातरं सतीं ।
स्वकर्म कारिणे गतिं हरि प्रियाञ्च पार्वतीम् ।।

आप प्रजा की उत्पत्तिकारक तथा पालक हैं। पराक्रमी कर्मों के कारण गति-स्वरूपा हैं। आप पार्वती के समान सर्वगुण सम्पन्ना हैं। हे सती माता! हम बारम्बार नमस्कार करते हैं।

अनंतशक्तिकान्तिदां यशोऽर्थभुक्तिमुक्तिदां ।
पुनः पुनर्जगद्धितां नमाम्यहं सुरार्चिताम् ।।

आप अनन्त शक्तिदायक, क्रांतिकारक, यशोधन, विजय की दाता, भोग तथा मोक्ष प्रदायक एवं सदा कल्याणकारी हैं। इसी कारण आप देवताओं द्वारा पूज्य हैं।

जयेश्वरि त्रिलोचने प्रसीद देवि पाहि माम्।
जयन्ति ते स्तुवन्ति ये शुभं लभन्त्यमोक्षतः।।

हे त्रिलोचने! दया करो, रक्षा करो। जो व्यक्ति आपका गुणगान करते हैं, वे निश्चय ही कल्याण प्राप्त करते हैं। दयास्वरूपा, आप सहज ही उन्हें मोक्ष प्रदान कर देती हैं।

सदैव ते हतद्विषः परं भवन्ति सज्जुषः।
जराः परे शिवेधुना प्रसाधि मां करोमि किम्।।

हे माता! आप भक्तों के शत्रुओं का सदैव नाश करती हैं। आपके भक्त संसार में यश प्राप्त करते हैं। आप हमें भी उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त करें। आपके बिना मैं क्या करूं?

अतीव मोहितात्मनो वृथा विचेष्टि तस्य मे।
कुरु प्रसादितं मनो यथास्मि जन्म भंजनः।।

हे अम्बे! हम विराट मोह-माया में डूबे हैं। हमारे प्रयत्न असफल हो रहे हैं। अगर आप हम पर प्रसन्न हुई तो शीघ्र ही हम जन्म के बन्धन से मुक्ति पा लेंगे।

तथा भवन्तु तारका यथैव घोषितालकाः।
इमां स्तुतिं ममेरितां पठन्ति कालिसाधकः।।
न ते पुनः सदुस्तरे पतन्ति मोह गहरे।।

आपके भक्त सदा वीर, धीर, विजयी और सुखी हों। भगवती के जो भी उपासक इस स्तुति का पठन-पाठन करेंगे, वे कभी मोह-माया के गड्ढे में नहीं गिरेंगे।



श्री काली कवचम्

शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा। क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी।।

हूं हूं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुतिद्वयम्। दक्षिणे कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी।।

क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूं हूं पातु कपोलकम्। वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी।।

द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्याखिलप्रदा। खड्गमुण्डधरा काली सर्वांगमभितोऽवतु।।

क्रीं हूं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम। ऐंहूंॐऐंस्तन द्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम्।।

अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका। क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं करौ पातु षडक्षरी।।

क्रीं नाभि मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकेऽवतु। क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठं च कालिका सा दशाक्षरी।।

क्रीं मे गुह्यं सदा पातु कालिकायै नमस्ततः । सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ।।
ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिका हूं हूं पातु कटिद्वयम् । काली दशाक्षरी विद्या स्वाहान्ता चोरुयुग्मकम् ।।
ओं ह्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु जानुनी कालिका सदा । काली हृन्नामधेयं च चतुर्वर्ग फलप्रदा ।।
खड्गमुण्डधरा काली वरदाभय धारिणी । क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम ।।
क्रीं ह्रीं क्रीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकावतु । विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वांगभितोऽवतु ।।
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी । विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता घनत्विषा ।।
नीलाघना वलाका च मात्रा मुद्रा मिता च मा । एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला विभूषणाः ।।
रक्षन्तु मां दिग्विदिक्षु ब्राह्मी नारायणी तथा । माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता ।।
वाराही नरसिंही च सर्वाश्चामित भूषणा । रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु मां यथा तथा ।।

संकटमोचन काली अष्टक

चिन्तित देख इन्द्र की माता, जगदम्बे न तथ्य विचारो।
भ्रू से प्रकट भई श्री काली, क्रोधित खप्पर खड्ग सम्भारो।
कूद पड़ीं निर्भय रण में वे, चण्ड-मुण्ड के त्रिशूल मारो।
को नहिं जानत है जग में, मां संकटमोचन नाम तिहारो।।
बड़ी वीरता से मां तुमने, रण में चण्ड व मुण्ड पछारो।
शुम्भ निशुम्भ बड़े अभिमानी, तिनके शूल वक्ष में मारो।
रक्तबीज का काट लियो सिर, वरदानी कर गयो किनारो।

को नहिं जानत है जग में, मां संकटमोचन नाम तिहारो।।
भूमि शत्रु के रक्त रंग गई, जब खप्पर व खड्ग निकारो।
महिषासुर काटे गयो युद्ध में, बड़ा घमण्डी शत्रु विचारो।
कौन सो संकट मोहिं गरीब को, जो तुम पै मां जात न टारो।
को नहिं जानत है जग में, मां संकटमोचन नाम तिहारो।।
देवन के दुख दूर भए, तब झट-पट बाग स्वर्ग को झारो।
बरसे इतने फूल कि माता छिपीं क्रोध कर गयो किनारो।
ब्रह्मा विष्णु महेश मगन भए, छुए चरण यमराज विचारो।
को नहिं जानत है जग में, मां संकटमोचन नाम तिहारो।।

आरती काली मां की

आरती कीजै काली मां की...

काली मां की आरती कीजै, स्नेह सुधा सुख सुन्दर लीजै।
जिनके नाम लेत दुःख भाजै, ऐसी वह माता वसुधा की।।
पापविनाशिनि कलिमलहारिणी, दयामयी भवसागर तारिणी।
शस्त्रधारिणी शैल विहारिणी, बुद्धिराशि निजजन त्राता की।।
निशचर कुल मर्दिनि मां भगवति, गौरव गान करें दिन-राती।
शिव के हृदयासन की रानी, करें आरती हम सब ताकी।।

श्री ज्वाला काली की आरती

मंगल की सेवा, सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे।
सुनु जगदम्बे कर न विलम्बे, सन्तन के भण्डार भरे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।।
बुद्धि विधाता तू जगमाता, मेरा कारज सिद्ध करे।
चरणकमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन पड़े।
जब जब भीर पड़े भक्तन पर, तब तब आप सहाय करे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे।।
'गुरु' के वार सकल जग मोह्यो, तरुणी रूप अनूप धरे।

माता होकर पुत्र खिलावै, भार्या होकर भोग करे।
'शुक्र' सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश फल लिए, भेंट देन सब द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र धरे।
वार 'शनिश्चर' कुंकुम वरणी, जब लुंगड़ पर हुक्म करे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे।।
खड्ग खप्पर त्रिशूल हाथ लिए, रक्तबीज कूं भस्म करे।
शुम्भ निशुम्भ क्षणहिं में मारे, महिषासुर को पकड़ दरे।
'आदित' वारि आदि भवानी, जन अपने को कष्ट हरे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे।।
कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड-मुण्ड सब चूर करे।

जब तुम देखो दया रूप हो, पल में संकट दूर टरे।
'सोम' स्वभाव पर्‌यो मेरी माता, जन की अर्ज कबूल करे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे।।
सात वार की महिमा वरनी, सब गुण कौन बखान करे।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज करे।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध साधक तेरी भेंट धरे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे।।
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शिव शंकर हरि ध्यान धरे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चंवर कुबेर डुलाया करे।
जय जननी जय मातु भवानी, अचल भवन में राज करे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे।।

A.H.W. Sawan Series

काली चालीसा

मंदिरों व धार्मिक उत्सवों में पुस्तक भेंट करने वाले श्रद्धालु सज्जन प्रकाशक से सम्पर्क करें, उन्हें पुस्तकें लागत मूल्य पर दी जाएंगी।



मनोज पब्लिकेशन्स